मर्द की नाक

सुभाष चंदर
सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार

छंगा को इलाके इलाके में दबंग मर्द का रुतबा अगर हासिल है तो उसके पीछे कई ठोस कारण हैं। पहला कारण तो उसकी मोटी-मोटी मुंछे है जो हर समय तनी रहती है और उसकी दबंगई का विज्ञापन करती हैं। मूंछो के ठीक नीचे उबले आलू जैसे होठ हैं ,इन दोनों के बीच में एक छेद है। उस छेद के भीतर एक जुबान है। इस जुबान में दुनाली फिट है। इस दुनाली में गालियों के कारतूस भरे हैं जिन्हें वह अक्सर दागता रहता है। इनसे काम न चले तो वह हाथ छोड़ने में भी नहीं हिचकता। अलबत्ता ऐसे मौको पर वह जरूर ध्यान रखता है कि सामने वाला कमजोर भर हो। रही बात गुप्त रोगों वाले इश्तिहारी मर्द की तो बंदा वहाँ भी सौ फी सदी टंच है। इसका पक्का सबूत ये है कि उसने पिछले नौ सालों में तीन शादियां कीं और उन बीवियों को इतनी... इतनी मर्दानगी दिखाई कि पहली दो साल टिकी। उसने इन दो सालों में लगभग एक दर्जन बार माथे की पट्टी कराई। तीन बार पूरे बदन की सिंकाई करी और हड्डी तुड़वाने का मौका तो उसे सिर्फ़ एक ही बार मिला। दूसरा मौका मिलने ही वाला था कि उसके अंदर पी टी ऊषा की आत्मा प्रवेश कर गयी। वह भागी... ऐसी भागी कि सीधी अपने बाप के घर आकर रुकी। उसके बाद उसने ससुराल जाने का नाम नहीं लिया।

छंगा ने उसका पूरे तेरह दिन और सत्रह घंटे इंतज़ार किया। उसके बाद वह बीस कोस दूर के गाँव से एक औरत को ब्याह लाया। इस औरत ने पूरे चार साल छंगा की मर्दानगी को चुनौती दी। वह नाश्ते में बेनागा चार डंडे, दोपहर को चार-छह घूंसे का भोजन और रात को दस बारह थप्पड़ों के साथ रात का खाना खाती रही। उसके अलावा दारू के साथ चढ़ने वाली छंगा की दुर्दांत टाइप की मर्दानगी भी झेलती रही। उसके बाद भी वह अपनी हिम्मत के बलबूते पर छंगा की बीवी कहलाने का गौरव प्राप्त करती रही। एक दिन दारू के नशे में छंगा ने उसका हाथ तोड़ दिया, इसी के साथ ही उस औरत की हिम्मत ने भी उसका साथ छोड़ दिया। वह एक बार गयी तो ऐसी गयी कि बीती जवानी की तरह फिर नहीं लौटी।

इस घटना से छंगा की मर्दानगी को इतनी ठेस लगी कि वह पूरे तीन महीने तक पत्नी रहित रहा। इन महीनों में वह खेतों में काम करने वालियों से, नौकरानियों से कां चलाता रहा। कोठों को आबाद करता रहा। साथ ही साथ बीवी नं. 2 के पास वापस आ जाने के पैगाम भिजवाता रहा। वहाँ से 'ना' की पक्की चिट्ठी आ जाने के बाद, उसने फिर एक ब्याह रचा डाला।

बीवी नं. 3 उसकी मर्दानगी के आगे शुरू से ही कमजोर रही। फिर भी उसने अपनी हिम्मत, मेहनत और लगन से पूरे एक साल साथ महीने छंगा की मर्दानगी को झेला। उसके बाद वह भी टिल्ली-लिल्ली झा हो गयी।

छंगा ने इसके बाद फिर से अपने हाथ पीले कराने का अभियान शुरू कर दिया। पर आसपास के इलाकों में उसकी प्रसिद्धि इतनी अधिक फैल चुकी थी कि लड़की तो दूर, कोई विधवा, परित्यास्ता भी ब्याह की उससे करने की हिम्मत नहीं जुटा पायी।

और कोई होता तो हारकर चुपचाप बैठ जाता। या पुरानी बीवियों से ही घर वापसी की जुहार लगाता। पर वह मर्द था, वो भी दबंग मर्द। वह भला कैसे हार जाता। वह बिहार से बीस हजार में एक सत्तह बरस की लड़की खरीद लाया। लड़की के घर में उसके बाप और पांच बहनों के साथ भुखमरी नामकी मोहतरमा और रहती थीं। जो लड़की के जबान होते ही, बाप को उनकी बिक्री करने को उकसा देती थी। सो वह बेटी के जबान होते ही वह उन्हें सालाना बाज़ार में बेच आता था। अलबत्ता पंडितजी की मेहरबानी से उस पर ठप्पा ब्याह का जरूर लगवा लेता था। इस बिक्री से उसके घर का साल भर का खर्चा चल जाता था और बेटी के जीवन भर के दाना-पानी का जुगाड़ हो जाता था।

छंगा की चौथी बीवी। दुबली पतली रास की मरियल सी छोकरी थी। सांवला रंग, लम्बोतरा चेहरा, मोटी-मोटी आँखें और जगह-जगह से झांकती हड्डियाँ। कुल जमा यही हुलिया था उसका। चलते-फिरते कंकाल जैसी थी। सच बात तो ये थी कि अन्न और मांस आता है। छबीली के घर में तो हफ्ते में चार-छह बाद से ज्यादा पेट भर खाना ही नसीब ना था सो मांस भी उसी अनुपात में आया।

पर छंगा के घर आकर छबीली को और कुछ मिला ना मिला। पर दोनों जून का खाना जरूर मिला। बस इस दो जून के खाने के लिए उसे कीमत जो है, वो अच्छी खासी चुकानी पड़ी। सुबह-शाम लात-घूंसे, और रात को छंगा की दारूनोशी के बाद की चढ़ाई। रोज़ छंगा नशे में टल्ली होकर आता और उस पर चढ़ाई कर देता। रात-रात भर वह गर्भिणी गाय सी डकराती, हाथ पैर-जोड़ती। बदन के दर्द की शिकायत का हवाला देती, हड्डियों की जकड़न से उपजी मज़बूरी बताती। पर दबंग मर्द के आगे उसकी कहाँ चलती। वह ज्यादा ना-नुकुर करती। रोना-चिल्लाना करती। छंगा पर उतनी ही मर्दानगी चढ़ती जाती। वह मारते-मारते उसका बदन सुजा देता। कई बार तो वह बेहोश तक हो गयी पर दबंग मर्द ने अपनी मर्दनगी फिर भी दिखा ही दी।

इसी तरह सात-आठ साल गुज़र गये। इन सात-आठ सालों में बहुत कुछ बदल गया। दोनों जून के अच्छे खाने से छबीली की मरियल काया पर मांस चढ़ आया। तीन टाइम की बेनागी पिटाई ने उसके बदन को मज़बूत बना दिया। हर वक्त की गाली-गलौच ने उसकी जुबान की बंद नसें भी खोल दीं। किस्सा कोताह ये कि अब छबीली सात-आठ बरस पहले की मरियल, सहमी-सिमटी सी छबीली

ना रहीं। उसकी जगह एक 24-25 बरस की सांवली सलोनी, मज़बूत छबीली ने ले ली थी। छबीली की जवानी का ग्राफ ऊपर को जा रहा था पर अपने दबंग मर्द उर्फ चौधरी छंगा सिंह के मामले में ये उल्टा चल रहा था। वह अब पचास के लपेटे में पहुंच चुका था। यानी उसकी उम्र की दुकान में माल कम बचा था। बची-खुची कसर कोठे बाज़ी, दारू और हरामखोरी के चूहो ने पूरी कर रखी थी। अब वो तो सयाने शुरू से कहते हैं कि ऐसे हालात बन जायें तो एक टैम पे, मर्दानगी के फूल भी मुरझाने लगते हैं। छंगा के मर्द को भी अहसास तो होने लगा था पर दारू की गमक, मूंछों की छनक और मर्द होने की रमक पें इस अहसास को वह खुद से छुपाता रहा था। बाद में हारकर उसे गुप्त रोग विशेषज्ञो की शरण लेनी पड़ी। उन्होंने मर्दानगी के फूलो को तरोताज़ा बनाय रखने के लिए, उसके शरीर के गमले में शिलाजीत और जाने-जाने कौन सी औषधियों की खाद डाली। उसमें जाने वैधों की भस्मों और आसनों ने उसमें पानी डाला। कुछ दिनों तक मर्दानगी की क्यारी में बहार आई जरूर पर कुछ ही दिनों में ये बहार फिर रूठ गयीं।

अब छंगा का बाहर जाना लगभग बंद हो लिया। खेतों-क्यारियों में बी घसियारनें, निश्चिंत होकर न्यार काटने लगीं। कोठो की आवाज़ाही में विध्न पहले ही पड़ लिया था। अब मर्दानगी के परिक्षण का आखिरी अखाड़ा जो बचा था- उसका नाम था घर। घर जिसे छबीली नाम की मोहतरमा संभालती थी और छंगा की चौथी बीवी की पोस्ट पर तैनात थी। छंगा को यकीन था कि चाहे उसकी मर्दानगी का डंका कहीं और बजे ना बजे पर घर में तो उसका राज है, वहाँ तो उसे ही चाहिए था। इस साम्राज्य को बनाए रखने के लिए वह मेहनत भी पूरी करता था। साम्राज्य पर चूंकि खतरा मंडरा रहा था, सो उसे ऐहतियातन मुस्तैदी दोनों उसी अनुपात में अब उसने बिना गालियों के छबीली से बात करना बंद कर दिया। थप्पड़-घूसों वाली पिटाई की तीन बार की तय मात्रा बढ़ाकर छह बार कर दी थी। पर चाहकर लाठी का प्रयोग नहीं बढ़ा पाया था क्योंकि लाठी उठाने के बाद घंटो हाथों की नसें दुखती थीं। कई दिन मालिश करानी पड़ती थी। पर मज़बूरी थी, बीवी सभालनी भी तो जरूरी थी। अब उसने रात को छबीली के कमरे में जाना भी कम कर दिया था। अगर दारू के नशे में चला भी जाता तो थोड़ी देर बाद ही छबीली के उलाहने में सारा नशा उतर जाता। नशा दुबारा चढ़ाने के लिए उसे लाठी का इस्तेमाल करना पड़ता। इससे दो फायदे हो जाते, नशा दुबारा जम जाता और छबीली की जुबान, उसकी मर्दानगी के कसीदे पढ़ने से भी रुक जाती।

पर एक दिन इस लाठी का इस्तेमाल भी बंद हो गया। उस रात जब वह दारू पांनी के बाद, छबीली के कमरे में घुसा। कुछ नोचा-नाची सीकी तो छबीली के मुंह से निकल ही गया-,'' रहने दो, तुम ये नोचा-घसीटी ही कर सकते हो। तुम्हारे बस का कुछ ना है।'' सुनते ही छंगा के खून का टैम्परेचर बढ़ गया। उसने पहले राऊन्ड में दर्जन भर गालियां दी, चार-छह थप्पड़ भी रसीद कर दिए, चीख के रूप में उनकी पावती भी ले ली। पर उसे छबीली की आँखों की हिकारत कम ना हुई। इस हिकारत की

बीमारी के इलाज के लिए उसे लट्ठ नामक यंत्र का उपयोग ही बेहतर लगा। उसने जैसे ही मारने के लिए लट्ठ ऊपर उठाया। लंबी-तगड़ी छबीली ने ऊपर से ही लट्ठ को पकड़ कर छीन लिया। छंगा ने अपने बाजुओं और दारू की सारी ताकत लगा दी पर लट्ठ नहीं छीन पाया। अलबत्ता इस धक्का-मुक्की में वह ज़मीन और सूघं गया। थोड़ी देर बाद हिम्मत करके उठा। और मज़बूरी में, अपनी मर्दानगी की क्यारियों में, गालियों का पानी छोड़ते हुए बाहर आ गया।

उस पूरी बोतल चढ़ा लेने के बाद भी उसे नींद नहीं आई।

इस घटना के बाद छंगा के मर्द में कई गुणात्मक परिवर्तन हुए। उसका गांधी जी के अंहिसा के सिद्धांत में विश्वास बढ़ने लगा। लाठी का प्रयोग पहले ही वर्जित हो चुका था। धीरे-धीरे थप्पड़-चलन क्रिया भी मंदी पड़ने लगी। मर्दानगी की मेंटीनेंस का सारा दारोमदार गालियों तक सीमित रह गया। छबीली के कमरे में एक-दो बार गया भी तो वहाँ अपनी लाठी पड़ी देखकर चुप-चुपाने बाहर आ गया।

अब छंगा का मर्द खुद को बूढ़ा मानने लगा था।वह दिन भर मूंछों पर ताव देकर गाँव-जवार में घूमता। नौकरों को गलियाता। रात को लालपरी की बोतल खोलता, हर पैग के साथ गालियों की मात्रा बढ़ाता जाता। छबीली, उसके बाप, अपनी पुरानी बीवियो, पड़ौसियों सभी की माँ-बहनों से जुबानी रिश्ता बनाया करता कुछ देर बहकता, अंत में थक-हारकर सो जाता।

उस रात भी वह सारे शराबोचित निपटाकर सो रहा था। रात के लगभग तीन बजे होंगे। एकाएक खटके से उसकी आँखें खुली। वह हड़बड़ा सा गया। उसे लगा जैसे बरामदे से होकर दबे-कदमों कोई अंदर के कमरे की ओर जा रहा है। जरूर चोर होगा। इतना सोचते ही उसने सरहाने रखा कट्टा उठाया। और बिना आवाज़ किये बाहर आ गया। उसने देखा कि वह चोर सीधे छबीली के कमरे में घुस गया। घुसते ही उसने अंदर की सांकल लगा ली। बस उसका माथा ठनक गया। हे राम ! मर्द के घर मुठमर्दी। नहीं....ऐसा नहीं हो सकता। उस जैसे दबंग मर्द की बीवी ऐसी नहीं हो सकती। नहीं... उसे स्वीकार करने में वक्त लगा। उसने सोचा, क्यों टाइम पास करूं सीधे दरवाज़ा खटखटा दूँ। उसने दरवाज़ा खटखटा दिया। अंदर से आ रही। खुसर-पुसर की आवाजें बंद हो गयीं। छंगा ने दरवाज़ा फिर जोर से खटखटाया- और चिल्लाया-,'' बाहर निकल हरामी, छंगा की इज्ज़त से खेलता है। आज तुझे जिंदा नहीं छोडूगा।'' उसका इतना कहना था कि तेज़ी से दरवाज़ा खुला। एक

आदमी तेजी से उसे धक्का देता हुआ बाहर की ओर भागा। उसके धक्के से वह कट्टे समेत ज़मीन पर जा गिरा। उठते-उठते उसने देखा कि वो चोर और कोई नहीं उसका नौकर मन्नू पासी था। उसने अपना माथा ठोक लिया। उसके बाद उसने धर लिया छबीली को। उसके इश्क की ऐसी खबर ली कि मारते-मारते डंडा भी टूट गया। थक-हारकर वह अपने कमरे में आ गया। कमरे में आते ही उसने बोतल खोल ली और नीट ही डकार गया। नींद आने से ऐन पहले उसने प्रण कर लिया कि इस मन्नू पासी के बच्चे की पहले सुताई करेगा फिर उसे काम से निकाल देगा। उसी ने उसकी भोली छबीली को बरगलाया है।

पर उसे अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने का मौका नहीं मिला क्योंकि सुबह जब वह सोकर उठा तो उसने देखा कि मन्नू अपने साजो सामान के साथ घर से रफू-चक्कर हो चुका था। उसके सामान में छबीली और उसके गहने रुपये भी थे। छबीली के कमरे और उसकी तिज़ोरी की हालत सारी कहानी ब्यान कर रही थी। यह दृश्य देखकर वह बेहोश होने की अवस्था को प्राप्त हुआ। क़ाफ़ी देर तक उसी अवस्था में पड़ा रहा। होश आने पर उसने पहला काम अपने खास आदमी गोबरधन के पास जाने को किया। उसके कान में सारा वाक्या फुसफुसाकर ब्यान किया। इस किस्से ने गोबरधन की बटन जैसी आँखें बजरबट्टू जैसी बना दी। पहले तो उसने मन ही मन मन्नू पासी की किस्मत से रश्क किया। अपनी किस्मत को कोसा कि मन्नू की जगह वो क्यों नहीं था। उसके बाद उसने जो पहला वाक्य उचारा – वो ये था।

''मालिक, मालकिन ने तो आपको कहीं का नहीं छोड़ा। लोग सुनेंगे तो क्या कहेंगे। मालकिन वापस नहीं आईं तो आपकी नाक ही कट जाएगी।'' उसके ऐसा कहते ही छंगा ने घबराकर अपनी नाक पर हाथ रख लिया और वे दोनों मिलकर छबीली को खोजने और उसे वापस घर लाने की योजनाएं बनाने लगे। आखिर इलाके में नाक भी तो बचानी थी। वैसे भी नाक के अलावा छंगा के पास बचा ही क्या था।

अगले दिन से गोबरधन ने छबीली-खोज अभियान शुरू कर दिया। चार दिन बाद खबर आ गयी कि मन्नू और छबीली पास के शहर में किराये के मकान में रह रहे हैं।

छंगा को इस खबर से काफ़ी शान्ति मिली। नाक की प्लास्टिक सर्जरी की संभावनाएं पनपने लगीं। उसने ऐहतियातन कट्टा कमर में ठूंस लिया कि छबीली राजी से आये तो नहीं गैर-राजी कट्टे के बल पर ले आयेगा। पर गोबरधन ने रोक दिया-,'' मालिक वह हमारा गाँव नहीं शहर है, किसी को हवा लग गयी कि आपके पास हथियार है तो मालकिन के पास जाने की जगह जेल चले जाओगे। नाक दो-दो बार कट जायेगी।''

छंगा ने इसके बाद भी फेंटे से कट्टा नहीं निकाला तो गोबरधन ने एक और तीर छोड़ दिया। बोला-,'' मालिक, मान लो, छिप-छिपाकर हम कट्टा ले भी गये तो आपसे कौन सा गोली चलेगी। जानते हो ना कित्ता जोर लगता है, घोड़ा दबाने में। बची है इत्ती जान अंगुलियों में।'' कहकर वह व्यंग्य से मुस्करा दिया। उसकी मुस्कान से छंगा की हिम्मत पस्त हो गयी। कट्टा फिर से मेज की दराज़ में ही पहुंच गया।

शाम को ठीक पांच बजे वे दोनों छबीली-मन्नू के ठिकाने पर पहुंच गये। छंगा ने गोबरधन को घर के बाहर ही खड़ा कर दिया और कमरे में घुस गया। उस समय छबीली और मन्नू बिस्तर पर लेटे-लेटे एक-दूसरों के नैनों की झील में तैराकी कर रहे थे। तभी उस झील में पत्थर सा फेंकने की आवाज़ आई। दोनों ने चौंककर देखा तो पत्थर के रूप में साक्षात छंगा खड़ा था। छंगा को देखते ही मन्नू पासी ने दरवाज़े की ओर छलांग लगानी चाही पर छबीली ने उसे रोक लिया। छंगा को यह देखकर कट्टा साथ न लाने का अफसोस हुआ। वरना इस दृश्य को देखकर वह दोनों हाथों से पकड़कर ही सही

गोली जरूर चला देता। उसकी आँखों से आग की लपटें निकल रहीं थीं। पर उनसे मन्नू जरूर तप रहा था, पर छबीली फुसफुसाहट की भाषा में बात हुई। तय ये हुआ कि गहने-पैसे बहुत दिन ना चलेंगे। वहां इतनी बड़ी हवेली छोड़कर एक-एक कमरे के किराये के कमरो में भटकना पड़ेगा। फिर हारकर मेहनत-मज़ूरी ही करनी पड़ेगी। इन सारे मुद्दो पर फुसफुस विमर्श हुआ। फिर छबीली ने मन्नू के कान में कुछ ख़ास कहा। उसे सुनते ही उसकी आँखें फैलकर कानों को गयीं। शब्दों में कहें तो मन्नू ने सिर्फ़ इतना कहा क्या ऐसा हो सकै हैं ? छबीली उवाची – देखते हैं।

उसके बाद छबीली मन्नू का हाथ पकड़कर फिर छंगा के सामने आ डटी। दोनों को साथ देखकर छंगा को लगा जैसे उसने नीट शराब का घूंट मार लिया हो, पर इज्जत का सवाल था, सो वह जी कड़ा कर के घूंट पी गया। उसने छबीली से पूछा – बोलो क्या कहती हो। चलोगी, मेरे साथ ?

- हाँ चलूंगी, पर मन्नू भी मेरे साथ चलेगा ? छबीली ने सौदेबाजी का पहला पत्ता फेंका।
- छंगा बिलबिला गया। यो तो बेइज्जती की इंतहा हो गयी। उसने चौधरियों की आन-बान शान की दुहाई दी। खानदान की इज्जत के फटते कपड़े दिखाये। बदनामी की बाढ़ में डूबता घर दिखाया। पर छबीली इन सारे दृश्यों से कतई प्रभावित नहीं हुई। उसने मन्नू के बिना जाने से इंकार कर दिया। छंगा ने क़ाफ़ी देर सोचा। बहसबाज़ी भी की। अंत में बात का तोड़इस बात पर छूटा कि मन्नू साथ चलेगा। पर हवेली में छबीली के साथ नहीं रहेगा। अलबत्ता छबीली को उसके कमरे में जाने की छूट होगी। वो भी सिर्फ़ रात को।

छबीली और मन्नू ने इस प्रस्ताव को खुशी-खुशी अनुमोदन दे दिया।

पर मामला अभी खत्म कहाँ हुआ था। छबीली ने एक और डिमांड रख दी कि मैं तब चलूगी जब गाँव की हवेली मेरे नाम करोगे ? इस बात पर छंगा के साथ मन्नू भी चौंक गया। पर उनका कोई असर नहीं था। वह चारपाई से उठी और ऐन छंगा के सामने खड़ी हो गई और उतने ही तनाव से बोली –

-,'' क्यों चौधरी, अब यहाँ क्या लेने आया है ?''

- तुझे, अपनी बीवी को। छंगा ने खुद पर जब्त करते हुए जवाब दिया।

- किसकी बीवी तीन बीवियों को बिना तलाक दिये शादी की है। ऐसा ब्याह कोरट में कोई नहीं मानता ज्यादा करेगा तो बिना तलाक दिये, ब्याह रचाने में जेल जाना पड़ेगा। समझा कुछ... आया बड़ा मुझे ले जाने वाला।

- ये तू क्या कह रही है। लगता है शहर आते ही कोरट-कचहरी की हवा लग गयी है। छंगा ने शब्दों के तीरों को ज़हर में बुझाते हुए कहा।

- हाँ लग गयी है तो...। वकील साब से मिल ली हूँ। उन्होंने कहा है पाँच सात दिन में ब्याह करा देंगे।

- पर तू... तू तो मेरी बीवी है। छंगा शादी की बात सुनते हड़बड़ा गया।

- किसकी बीवी, कैसी बीवी... तुझ बुड्ढे के पास धरा क्या है ? मार-पीट, गाली गलौच बस महीना... ना... मुझे ना जाना उस नरक में वापस... छबीली धमक के बोली –

- ना... ना... रामजी की सौं... अब कुछ ना कहूंगा। ना गाली-गलौच, ना मार-पीट। भरोसा कर.... देख मेरे घर की इज्जत तेरे हाथ में है। तू घर ना लौटी तो मेरी नाक कट जाएगी। लोग कहेंगे छंगा की लुगाई भाग गयी। मान जा... वापिस चल.... कहते-कहते छंगा की आँखों में पहले भरी आग, नीर भरी बदली में बदल गयी और उसमें से थोड़ी देर में पानी बरसने लगा।

- अब छबीली और मन्नू दोनों ही हतप्रभ से खड़े थे। छबीली ने तो उसे गुर्राते, हाथ उठाते, जबरदस्ती करते ही देखा था। यहाँ तो वो अपनी मर्दानगी समेत रो रहा था। उसने कुछ सोचा। फिर छंगा को वहीं बैठा छोड़कर मन्नू को बाहर ले गयी। दोनों में क्योकि मन्नू के साथ फुसफुस विमर्श में ये मुद्दा था ही नहीं। यह छबीली की उपजाई खोपड़ी में उगा बीज था।

हवेली वाले मुद्दे पर छंगा बुरी तरह गर्म हो गया। उठकर बाहर चल दिया। पर फिर दरवाज़े ही लौटकर आ गया। सौदेबाजी इस बात पर चली कि हवेली का आधा हिस्सा छंगा छबीली के नाम करेगा। बाकी आधे हिस्से के बदले पाँच बीघे खेत। क़ाफ़ी किल्ला-चिल्ली के बाद सौदे पर मुहर लग गयी। इस सौदेबाज़ी में छंगा को आधी हवेली और पाँच बीघे खेतों की चपत लगी। पर यह चपत छंगा को झेलनी ही थी। वरना खानदान की इज्ज़त, ढूबने का छंगा की मर्दानगी की नाक वगैरहा कटने का खतरा था। इन सारी अहम चीज़ों के आगे थोड़ी सी प्रॉपर्टी क्या थी ?

अगले दिन सुबह ही छबीली हवेली में नमूदार हो गयी। उसके पीछे-पीछे मन्नू भी अपने कमरे में पधार गया। छंगा ने वादे के मताबिक हवेली का आधा हिस्सा और पाँच बीघे खेत छबीली के नाम कर दिये। प्रॉपर्टी नाम होने तक छबीली ने मन्नू के कमरे में आवाजाही रखी। रात वाले भी नियम का भी पालन किया। रजिस्ट्री के कागज़ आते ही, मन्नू भी अपना कमरा छोड़कर छबीली के कमरे में शिफ्ट कर गया।

छंगा ने उस दिन पूरी बोतल शराब पी और रोते हुए छबीली के बंद कमरे की तरफ निहारता रहा। रोता रहा और रोते-रोते भी अपनी नाक पर हाथ फेरकर देखता रहा कि बाहर वालों के लिए तो सलामत है ना।

कहानी का बस थोड़ा सा हिस्सा बचा है। कालांतर में छबीली रानी ने मन्नू पासी के सहयोग से पूरे नौ महीने बाद एक बच्चा पैदा किया जिनका बाप कहलाने का सौभाग्य चौधरी छंगा सिंह को प्राप्त हुआ। उनका सीना और उनकी नाक दोनों तन गये। उनकी मर्दानगी के किस्से फिज़ाओं में

तैर गये। उन्होंने बेटे के जन्मदिन पर एक शानदार दावत भी की। आगे चलकर उन्हें चार बार ऐसी दावतें और देने का अवसर मिला। चौथे बच्चे की दावत के बाद उन्होंने ज़मीन का का बाकी का हिस्सा भी छबीली के नाम कर दिया। वह बाहर की बैठक में शिफ्ट हो गया। मन्नू और छबीली अंदर के कमरों में बने रहे और जनसंख्या वृद्धि के उपायों पर काम करते रहे।

एक दिन जब छबीली सुबह बैठक में छंगा को चाय देने गई तो उनके बिस्तर पर उसकी जगह एक फाइल और कागज़ पड़ा मिला। गोबरधन को बुलाकर वह कागज़ पढ़वाया गया उसमें लिखा था –

- छबीली, मैं तुम्हारा बहुत अहसान मंद हूँ कि तुमने मुझे बच्चों का सुख दिया। मेरे खानदान की लाज बचाई। अब इस दुनियां जहान से मेरा मोह खत्म हो गया है। सो मैं घर छोड़कर साधु बनने जा रहा हूँ। कुछ दिन भगवान की आराधना करूंगा। हवेली और बाकी संपत्ति भी तुम्हारे नाम कर रहा हूँ। कागज़ साथ में रखे हैं। मेरे बच्चों को खूब शानो-शौकत से पालना। उन्हें बताना कि जैसे मैंने अपने घर की नाक बचानये रखी, वैसे ही वे भी बनाए रखें। कुछ भी चला चाए तो वापस आ जाता है। पर नाक एक बार कट जाए तो फिर पहले जैसी नहीं रहती।

राम... राम... बच्चों को प्यार

तुम्हारा पति

छंगा सिंह

छबीली पत्र की इबारत सुनकर बहुत रोई। उसने भगवान का शुक्रिया अदा किया कि उसने उसके पति को सद्बुद्धि दे दी।

भगवान जैसी सद्बुद्धि तूने छंगा को दी, वैसी उसके जैसी नाक वाले सारे मर्दों को दे।